ISSN 2231-6191

जन विकल्प

9

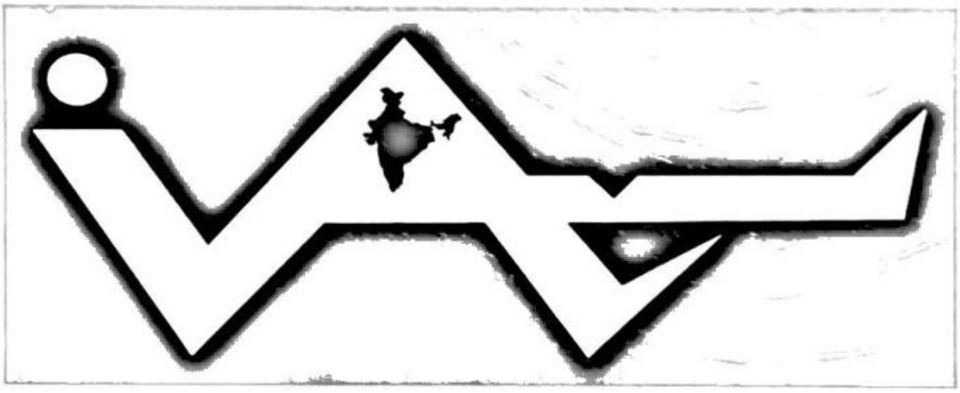

कृष्णा सोबती विशेषांक

विकल्प, तृशूर

ISSN : 2231-6191

जन विकल्प

अंक : 9 सितंबर 2019

कृष्णा सोबती विशेषांक

संरक्षक
के.जी. प्रभाकरन

प्रबन्ध संपादक
वी.जी. गोपालकृष्णन

संपादक
पी. रवि

सह संपादक
के. एम. जयकृष्णन
पी. गीता

सलाहकार समिति
रवि भूषण (रांची)
विनोद शाही (जालंधर)
वि. कृष्णा (हैदराबाद)
देवेन्द्र चौबे (नई दिल्ली)
विनोद तिवारी (नई दिल्ली)

अनुक्रम

संपादकीय		
1. समय का अतिक्रमण करती रचनाएँ	सिनीवाली शर्मा	7
2. समकालीन स्त्री लेखन के संदर्भ में कृष्णा सोबती	सरफराज अहमद	9
3. कृष्णा सोबती के अप्रतिम स्त्री-चरित्र	अनुराधा सिंह	15
4. नारी वृत्त संचार की वाहिका	अरुण शीतांश	19
5. रत्ती, मित्रो, अम्मु...	प्रभाकरन हेब्बार इल्लत	24
6. *डार से बिछुड़ी* में संघर्षित स्त्री जीवन	दिव्या रामचन्द्रन	32
7. कथा के कलेवर में एक संपूर्ण नाटक : *मित्रो मरजानी*	प्रज्ञा	37
8. *सूरजमुखी अंधेरे के* उपन्यास में स्त्री अस्मिता की तलाश	नुसरत जबीं सिद्दिकी	46
9. ऐतिहासिक तथ्य और वैयक्तिक कल्पना *ज़िन्दगीनामा* में	मिनी ई.	52
10. *ऐ लड़की* : खुद से जिरह और 'व्यक्ति' की रचना की गाथा	सुमन केशरी	56
11. *ऐ लड़की* : स्त्री का अन्तिम बयान	सिन्धु ए.	61
12. *समय सरगम* : वृद्धजीवन की बारीकियों की तलाश	आर. सेतुनाथ	65
13. गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिन्दुस्तान : मौत के मतदान का दस्तावेज	रामप्रकाश	69
14. *चन्ना* : एक रूढ़िमुक्त स्त्रीत्व की परिकल्पना	लेखा एम.	81
15. सकारात्मक सोच में लिपटा भविष्य का अक्स : कृष्णा सोबती की कहानियाँ	नीलाभ कुमार	85
16. *बादलों के घेरे* : मानव-मन के घेरों में उलझी कहानियाँ	सुप्रिया पी.	93
17. *सिक्का बदल गया* : विभाजन के पीछे पंजाब की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की पड़ताल की कहानी	ज्योति चावला	99
18. संवाद की रचनात्मकता बनाम रचनात्मकता का संवाद	बी. विजयकुमार	111
19. लेखन की जनपक्षधरता	गणपत तेली	116
20. हशमत का दोस्ताना	सुमा एस.	120
21. सही की तलाश में दो व्यक्तित्व	राजेश्वरी के.	124

बादलों के घेरे : मानव-मन के घेरों में उलझी कहानियाँ

डॉ. सुप्रिया पी.

1980 में प्रकाशित 24 कहानियों को संकलित करता कृष्णा सोबती का कहानी संग्रह 'बादलों के घेरे' में कहानियों की जो विविधता दीखती है वह उनके लीक से हटकर लिखने को प्रमाणिकता प्रदान करती है। ये कहानियाँ अमानवीयता के विरुद्ध भोगी हुई संवेदनाओं, संत्रास, घुटन और छटपटाहट के यथार्थ से भरी हैं। विभिन्न शैली जैसे डायरी, पत्र, वर्णन का प्रयोग किया गया है। कुछ कहानियाँ बहुत छोटी हैं तो कुछ लंबी। सभी कहानियों का अंत पाठक को एक झटका सा देता है। सोबती ने जीवन के विविध क्षेत्रों, घटनाओं और जीवन सन्दर्भों को विषय बनाया है। नए-पुराने सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं के बीच व्यक्ति का द्वन्द्व, प्रेम की असफलता, भारत-पाक विभाजन के दौरान द्वन्द्व, पारिवारिक विघटन, पीढ़ियों का संघर्ष, रिश्तों में बिखराव, वेश्या जीवन का यथार्थ आदि इनकी कहानियों की कथ्य धुरी हैं।

भारत की स्वाधीनता और ब्रिटिश साम्राज्यवाद से गलत समझौते के फलस्वरूप देश का विभाजन - ये दो ऐसी घटनाएँ हैं जिन्होंने समूचे भारतीय साहित्य को प्रभावित किया है। एक ओर लेखकों ने भारत में हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द और राष्ट्रीय स्वाधीनता के अस्तित्व की उद्घोषणा के बावजूद आम आदमी की यातना और हताशा में कोई अंतर नहीं आया, सिवाय उसके अपनी जड़ों से कटने और सदियों से बसे-बसाए जीवन के उजड़ने के। सोबती ने विभाजन की पृष्ठभूमि में सांप्रदायिक उन्माद और दहशत के बीच मानवीय करुणा और सद्भाव की खोज की। *सिक्का बदल गया*, *डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा* और *मेरी माँ कहाँ* जैसी कहानियाँ सांप्रदायिक दंगों की पृष्ठभूमि और मानवीय व्यवहार के विभिन्न रूप उद्घाटित करती हैं।

विभाजन की पृष्ठभूमि पर लिखी गई बहुचर्चित कहानी है - *सिक्का बदल गया*। शाहनी के सामान्य दैनिक व्यवहार के साथ कहानी आगे बढ़ती है और उसी के अत्यंत सामान्य प्रतिक्रिया के साथ समाप्त हो जाती है। जिस हवेली में वह दुल्हन बनकर आई थी, उसके आसपास के मीलों फैले खेत, दूर-दूर तक फैली हुई ज़मीने और कुएँ सब पराये हो गए थे। हिन्दू परिवारों को सीमा की दूसरी ओर ले जाने के लिए ट्रकें आ गई हैं। शाहनी के भीतर गहरी वेदना है परंतु वह तय करती है कि वह रो-रोकर नहीं, शान से निकलेगी इस पुरखों के घर से, मान से लांघेगी यह देहरी, जिस पर एक दिन वह रानी बनकर आ खड़ी हुई थी। सभी गांववाले शाहनी को भीगी आँखों से विदा कर रहे हैं। सब निस्सहाय थे क्योंकि राज पलट गया है, सिक्का बदल गया है। रात को कैंप की ज़मीन पर पड़ी वह सोचने लगी - "राज पलट गया है.... सिक्का क्या बदलेगा? वह तो मैं वहीं छोड़ आई..." शाहनी के लिए बंटवारे के कारण हुकूमत के बदल जाने का, सिक्का बदल जाने का कोई अर्थ नहीं है। उसे तो मानवीय मूल्यों के सिक्के के बदल जाने, संबन्धों को निरर्थक बना दिये जाने का दुःख है।